श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

खुलासा

किताब खुलासा वानी हकी सूरत फजर की।
रूहें अर्स की दिल दे देखो।

खुलासा फुरमान का
कुरान का खुलासा

ए होत फुरमाया हक का, जो किया खुलासा ए।
किए हादीने जाहेर, याही मगज मुसाफ के।। १ ।।

हक श्री राजजी महाराज के हुकम से यह कुरान का खुलासा हादी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को जाहिर किया है।

ए देखो खुलासा फुरमान का, मोमिन करें विचार।
रूहें हक सूरत दिल में लई, छोड़ी दुनियां कर मुरदार।। २ ।।

हे मोमिन! विचार करके देखो। यह कुरान का सार (खुलासा) है जो ब्रह्मसृष्टियों ने युगल स्वरूप श्री राजजी महाराज को दिल में बिठाकर दुनियां को मुरदार (नाचीज) समझा और छोड़ दिया।

चौदे तबक होसी कायम, इन नुकते इलम हुकम।
हक अर्स वाहेदत में, हुआ रोसन दिन खसम।। ३ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से और श्री राजजी महाराज के हुकम से सारे ब्रह्माण्ड (चौदह लोकों की दुनियां) को इस तारतम वाणी से मुक्ति मिलेगी। श्री राजजी महाराज का अर्श परमधाम है जहां सब एकदिली है, जो आज दिन तक किसी को पता नहीं था उसकी पहचान इस दुनियां में अब जाहिर हो गई। अज्ञानता हटकर ज्ञान का दिन जाहिर हो गया।

बड़ाई नुकते इलम की, कहूं जाहेर न एते दिन।
खोले द्वार खिलवत के, एही कुंजी बका वतन।। ४ ।।

तारतम ज्ञान ही अखण्ड परमधाम की जानकारी देने वाली कुंजी है जो अभी तक जाहिर नहीं हुई थी। अब इस तारतम से परमधाम के छिपे रहस्यों को जाहिर कर दिया।

खुले द्वार सब अर्सों के, एही रूह अल्ला इलम।
एही लदुन्नी खुदाई, ए कौल हक हुकम।। ५ ।।

रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) के इल्म और तारतम वाणी से तीन सृष्टियों के अर्शों के द्वार खुल गए, अर्थात् क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के धाम, बैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम की सबको पहचान हो

Nijanand App

गई। श्री राजजी महाराज ने वायदा किया था कि मैं आकर कुरान के भेद खोलूंगा, उसी के अनुसार यह उन्हीं के मुख की वाणी है। जो दुनियां में नहीं थी, वह तारतम वाणी भेज दी।

ए कलाम आए हक से, ए नुकता कह्या जे।
ए जानें विचारें मोमिन, जिन वास्ते हुआ ए।। ६ ।।

यह तारतम वाणी श्री राजजी महाराज के अपने मुखारबिन्द की वाणी है। इसी को नुक्ता इलम कहा है। इसको मोमिन ही समझेंगे और विचारेंगे जिनके वास्ते यह आई है।

किया बेवरा इन वास्ते, उतरे अर्स से रूहें फरिस्ते।
मोमिन मुतकी ए सुन के, रेहे न सकें जुदे।। ७ ।।

रूहें और फरिश्ते (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि) अपने अर्शों से आए हैं। उन्हीं के वास्ते कुरान का यह खुलासा किया है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि इसको सुनकर इससे अलग नहीं रह सकतीं।

जाहेर हुआ फुरमान से, क्यों आरिफ करें न सहूर।
रूहें फरिस्ते और दुनियां, ए लिख्या तीनों का मजकूर।। ८ ।।

यह बात कुरान से जाहिर हो गई है। कुरान के ज्ञानी फिर इस पर विचार क्यों नहीं करते। कुरान में ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि तीनों की हकीकत लिखी है।

देखो दोऊ पलड़े, एक दुनी और अर्स अरवाए।
रूहें फरिस्ते पूजें बका सूरत, और लिख्या दुनियां खुदा हवाए।। ९ ।।

एक तरफ अर्श की अरवाहें ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि हैं, दूसरी तरफ दुनियां की जीवसृष्टि का खुलासा है। ब्रह्म और ईश्वरीसृष्टि श्री राजजी महाराज अखण्ड पारब्रह्म की पूजा करेंगी और जीवसृष्टि निराकार की पूजा करेंगी।

ए जो गिरो अर्स अजीम की, तिन पे हकीकत मारफत।
बड़ी बड़ाई रूहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत।। १० ।।

जो परमधाम की जमात ब्रह्मसृष्टियां हैं वही हकीकत और मारफत, ज्ञान और विज्ञान की वाणी को समझती हैं। रूहों की अखण्ड परमधाम में, जहां एकदिली है, बड़ी बड़ाई है।

नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फरिस्तन।
कायम वतन से उतरे, सो पोहोंचे न हकीकत बिन।। ११ ।।

अक्षरधाम से जो सृष्टि यहां पैदा हुई है वही ईश्वरीसृष्टि हैं यह भी अपने अखण्ड घर से उतरकर खेल में आई हैं यह भी हकीकत की वाणी के बिना अपने घर नहीं पहुंच सकेंगे।

ए बेवरा सिपारे आम में, इन्ना इन्जुलना सूरत।
रूहें फरिस्ते दे सलामती, करें हुकम फजर बखत।। १२ ।।

यह विवरण कुरान के आम सिपारा की इन्ना इन्जुलना सूरत में लिखा है जिसमें रूहें और फरिश्ते फजर तक सलामती (सुरक्षित) से दुनियां में रहेंगे और फजर के वक्त दुनियां को अखण्ड करने का हुकम देंगे।

ए पैदा बनी-आदम की, ए जो सकल जहान।
सो क्यों कर आवे अर्स में, बिना अपने मकान।। १३ ।।

सारी दुनियां आदि आदम (नारायण) की औलाद है और इसलिए यह अपने मुकाम बैकुण्ठ (निराकार) को छोड़कर अखण्ड परमधाम में नहीं आ सकते।

Nijanand App

जाहेर सिपारे आठमें, लिख्या पैदा आदम हवाए।
अबलीस लिख्या दुनी नसलें, और दिल पर ए पातसाह।। १४ ।।

कुरान के आठवें सिपारे में आदम और हव्वा की हकीकत लिखी है। आदम की औलाद (जीवसृष्टि) के दिल पर शैतान अबलीस (नारद दिलों पर बैठा है) की हुकूमत है।

भया निकाह आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस।। १५ ।।

आदम और हव्वा (नारायण और माया) की शादी हुई और दुनियां की शादी अबलीस (नारद) से हुई। कुरान में साफ लिखा है कि यह इच्छाओं की पूर्ति के लिए निराकार की पूजा करेंगे।

तिन हवा हिरस से पैदा हुई, अपनी खाहिसें जे।
सो फैल कर जुदे पड़े, ए जो फिरे दुनियां के फिरके।। १६ ।।

अपनी-अपनी चाहनाओं से माया के अन्दर जिसकी जहां से इच्छा पूरी हुई, उसी के अनुसार कर्म करके दुनियां अलग-अलग धर्मों में बंट गई।

पैदास बीच अबलीस कह्या, ए जो आदम की नसल।
पूजे हवा को खुदा कर, दुनियां एह अकल।। १७ ।।

आदम की औलाद (आदमी) के दिल में शैतान (अबलीस, नारद) की बैठक बतलाई। इस वास्ते दुनियां वाले अपनी अकल से निराकार को ही खुदा करके पूज रहे हैं।

कह्या कुलफ आड़े ईमान के, हवाई का देख।
दुनी का लिख्या बेवरा, सो ए कहूं विवेक।। १८ ।।

दुनियां के दिलों में खुदा के लिए ईमान लाने के वास्ते निराकार का ताला लगा है, अर्थात् नारद उनको नारायण निराकार से आगे नहीं जाने देता। ऐसा दुनियां का विवरण है जो विचार कर कह रहा हूं।

राह पकड़े तौहीद की, धरे महंमद कदमों कदम।
सो जानो दिल मोमिन, जिन दिल अर्स इलम।। १९ ।।

एक पारब्रह्म अक्षरातीत की पूजा करना तथा आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बताये हुए रास्ते पर केवल मोमिन (ब्रह्मसृष्टि), जिनके दिलों में खुदाई इल्म (जागृत बुद्धि का ज्ञान) है, ही चलेंगे।

कह्या सिजदा आदम पर, अजाजीलें फेरया फुरमान।
सो लिखी लानत सबन को, जो औलाद आदम जहान।। २० ।।

अजाजील को आदम के ऊपर सिजदा बजाने का हुकम खुदा ने दिया। इसे अजाजील (विष्णु भगवान) ने ठुकरा दिया और हुकम नहीं माना। इसके कारण सारी दुनियां जो आदम की औलाद है उसको सजा मिली, क्योंकि अजाजील का मन नारद सबके अन्दर बैठा है।

असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फुरमान।
पातसाही अबलीस दिल पर, जो करत है सैतान।। २१ ।।

कुरान के बीच में दुनियां की हकीकत इसी तरह की लिखी है। यह शैतान अबलीस दुनियां के दिलों पर बैठकर हुकूमत कर रहा है।

Nijanand App

गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानतः
ढूंढ़ें दज्जाल को बाहेर, पावें ना लिखी इसारत।। २२ ।।

गुनाह किया अजाजील (विष्णु भगवान) ने और सजा मिली दुनियां को, इसलिए दुनियां वाले शैतान को बाहर ढूंढ़ते हैं और कुरान में लिखी इशारतों को नहीं समझते जो इस तरह हैं।

अबलीस लिख्या दुनी नसलें, पातसाही करे दिलों पर।
ऐसा लिख्या तो भी ना समझे, ए देखें ना रूह की नजर।। २३ ।।

आदम की नस्ल दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस (नारद) की बादशाही है, ऐसा कुरान में स्पष्ट लिखा है। फिर भी आत्म दृष्टि से न देखते है और न समझते हैं।

चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत अजाजील।
राह मारत सब दुनी दिलों, अबलीस इनों वकील।। २४ ।।

चौदह लोकों के सिंहासन (बैकुण्ठ में) पर अजाजील (विष्णु) फरिश्ता बैठा है। जिसका वकील अबलीस शैतान (नारद) है जो सब दुनियां के दिलों पर बैठकर खुदा के रास्ते पर चलने नहीं देता।

बुरका हवा का सिर पर, ले बैठा बुजरक।
दे कुलफ आड़े ईमान के, किए सब हवा के तअलुक।। २५ ।।

यह अजाजील फरिश्ता अपने ऊपर निराकार का आवरण (बुर्का) ओढ़े बैठा है। दुनियां खुदा पर ईमान न ला सके, इसलिए इसने निराकार का ताला लगा रखा है। सारी दुनियां को इस तरह से निराकार का पूजक बना दिया है।

तोड़ हवा कुलफ ले ईमान, सोई कह्या सिरदार।
हवा तरक कर लेवे तौहीद, ए बल पैगंमरी हुसियार।। २६ ।।

जो निराकार के ताले को तोड़कर खुदा (पारब्रह्म) पर यकीन लाएगा वही ब्रह्मसृष्टि है। निराकार को छोड़कर एक पारब्रह्म को पाने की ताकत केवल ब्रह्मसृष्टियों में है।

पूजे हवा कौल तोड़ के, ए फौज सबे अबलीस।
लेने बुजरकी जुदे पड़े, कर एक दूजे की रीस।। २७ ।।

जो पारब्रह्म को छोड़कर निराकार को पूजते हैं वह सब शैतान की फौज जीवसृष्टि है। जो आपस में एक-दूसरे से ज्ञानी बनने के लिए लड़-झगड़कर अलग हो गये।

सिपारे आठमें मिने, जहूद नसारे जुदे पड़े।
त्यों कौल तोड़ महंमद के, एक दीन पर रहे ना खड़े।। २८ ।।

कुरान के आठवें सिपारे में लिखा है कि यहूदी और अंग्रेज (यहूदी और निसारी) बुजरकी के वास्ते लड़-झगड़कर अलग हो गए। इस तरह से रसूल मुहम्मद के मानने वाले भी एक दीन में नहीं खड़े रहे।

कह्या अर्स दिल महंमद का, ए पूजें सब पत्थर।
माएने मुसाफ सब बातून, और ए लेत सब ऊपर।। २९ ।।

कुरान में खुदा का घर मुहम्मद का दिल कहा है और यह सब पत्थरों पर सिजदा बजाते हैं। कुरान की वाणी के अर्थ बातूनी हैं और यह मुसलमान सब जाहिरी अर्थ लेते हैं।

Nijanand App

लोक लानत जाने अबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह।
लोक ढूंढ़ें बाहेर दज्जाल को, इन किए ताबे अपनी राह।। ३० ।।

संसार वाले जानते हैं कि सजा अबलीस को मिली है। वह यह नहीं समझ पाए कि वह दुनियां के देलों पर बादशाही कर रहा है और इसलिए दुनियां मन के अधीन है (मन ही नारद है, अबलीस है)। फेर भी लोग समझते हैं कि बंदगी करते समय अबलीस बाहर से आएगा।

आकीन न रहे ऊपर का, जो होए जरा समया सखत।
तो आकीन उठ्या सबन से, जो आए पोहोंची सरत।। ३१ ।।

खुदा की बंदगी करने में जरा भी कठिनाई आए तो सबके ईमान गिर जाते हैं, क्योंकि यह समय आखिरत का आ गया है, इसलिए सबके दिलों से यकीन उठ गया है।

तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे वसीयत।
लिखाए महंमद मेंहेदिए, तो भी देखें न पोहोंची कयामत।। ३२ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में पहले से लिख रखा है कि जब इमाम मेंहदी जाहिर होंगे तो उनके मोमिन ारीयत और हुकूमत के बादशाह को पैगाम देंगे। उन पर कष्ट आएगा। देखो, वही समय आ गया है। उसी तरह से वसीयतनामे आए हैं। जिनसे जाहिर हो गया है कि इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी प्रकट हो ाए हैं और कयामत आ गई है। इस बात को वह नहीं समझते।

दिल मोमिन अर्स कह्या, कह्या दुनी दिल सैतान।
ए जाहेर इन बिध लिख्या, आरिफ क्यों न करें बयान।। ३३ ।।

मोमिनों के दिल में खुदा की बैठक है और दुनियां के दिल में शैतान की बैठक है। यह बिल्कुल ाफ लिखा है। फिर भी कुरान के पढ़े-लिखे इलमी बताते नहीं हैं।

जो कोई दुनियां कुंन से, आए न सके मांहें अर्स।
जो रूहें फरिस्ते उतरे, सोई अर्सों के वारस।। ३४ ।।

जो दुनियां खुदा के हुकम से (कुंन कहने से, 'हो जा' कहने से) पैदा हुई है, वह माया के जीव अखण्ड परमधाम में नहीं आ सकते। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि खेल में उतरी हैं। वही अखण्ड घरों, अक्षर धाम और परमधाम के वारिस हैं।

रूहें आइयां जुदे ठौर से, और जुदा ही चलन।
दुनियां राह क्यों ले सके, जिन राह मह होवें मोमिन।। ३५ ।।

ब्रह्मसृष्टियां अखण्ड परमधाम से आई हैं और उनका चलन ही अलग है। जिस रास्ते पर मोमिन कुर्बानी देते हैं उस रास्ते पर दुनियां वाले नहीं चल सकते।

मोमिन रूहें करें कुरबानियां, और मता वजूद समेत।
छोड़ दुनी इस्क लेवहीं, दिल अर्स हुआ इन हेत।। ३६ ।।

ब्रह्मसृष्टियां और ईश्वरीसृष्टि अपने को धन-सम्पत्ति और तन सहित कुर्बान कर देंगे। वह दुनियां की चाहनाओं को छोड़कर खुदा का इश्क लेंगे और इसलिए इनके दिलों को खुदा का अर्श (घर) कहा है।

Nijanand App

अर्स कह्या दिल मोमिन, कोई एता न करे सहूर।
आए वजूद बीच आदम, इनों दिल क्यों हुआ रोसन नूर।। ३७ ।।

मोमिनों के दिल को खुदा का अर्श (घर) कहा है। फिर भी कोई विचार नहीं करता। यह मोमिन इस संसार में आदमियों के तनों में आए हैं, तो भी संशय करते हैं कि यह भी आदमी ही हैं। इनके दिल में खुदाई ज्ञान कैसे आ गया है?

दुनी दिल पर अबलीस, दिल मोमिन अर्स हक।
कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक।। ३८ ।।

दुनियां के दिल में शैतान है। मोमिनों के दिल में पारब्रह्म विराजमान हैं। जो कुरान के इन वचनों पर विचार नहीं करते उनमें जरा भी अक्ल नहीं है।

ए देखें दिल अर्स मोमिन, अर्स हक बिना होए क्यों कर।
एह विचार तो न करे, जो कुलफ कहे दिलों पर।। ३९ ।।

मुसलमान जाहिरी में कुरान में पढ़ते हैं कि मोमिनों का दिल अर्श है, परन्तु संशय करते हैं कि खुदा तो अपने अर्श में ही हो सकता है। इनके दिलों के आगे निराकार का ताला लगा है। इससे आगे समझ नहीं सकते, इसलिए विचार नहीं करते कि इनका दिल अर्श है और खुदा तो अभी आया नहीं है, तो इनका दिल अर्श कैसे हो सकता है?

बीच कुरान रूहों का लिख्या, इनों असल अर्स में तन।
यों हक कलाम कहे जाहेर, मैं बीच अर्स दिल मोमिन।। ४० ।।

कुरान में साफ लिखा है कि रूहों के असल तन परमधाम में हैं (अर्श में हैं) खुदाई इलम कहता है कि मैं सदा मोमिनों के दिल में हूं। वही मेरा ठिकाना है, अर्श है।

पत्थर पानी आग पूजत, किन जानी ना हक तरफ।
कह्या दरिया हैवान का, समझ ना करे एक हरफ।। ४१ ।।

यह सब पत्थर, पानी, आग को पूजते हैं। किसी को भी खुदा के घर की तरफ की पहचान नहीं है। इस संसार को जानवरों का दरिया कहा है, इसलिए यह कुरान के एक शब्द को भी समझ नहीं पाते।

होए भोम बका की कंकरी, ताए पूजे चौदे तबक।
कुरान बतावे बका मोमिन, पर दुनियां अपनी मत माफक।। ४२ ।।

परमधाम की रेत की एक कंकरी (कणिका) जो अखण्ड है, उसे चौदह लोकों की ुनियां पूजती है। कुरान में भी लिखा है कि मोमिन अखण्ड हैं और वह भी पूज्य हैं। फिर भी दुनियां वाले अपनी अक्ल के अनुसार उन्हें साधारण आदमी समझते हैं।

इत सहूर दुनी का ना चले, सुरिया छोड़े ना इनों अकल।
सरभर करे मोमिन की, जिनकी अर्स असल।। ४३ ।।

दुनियां वालों की बुद्धि निराकार को छोड़कर आगे नहीं गई, फिर भी वह उन मोमिनों की बराबरी करते हैं जिनके मूल तन परमधाम में हैं।

Nijanand App

केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ।
डारें जुदागी दीन में, कहें हम सुन्नत जमात।। ४४ ।।

अपने आपको मुहम्मद साहब के ऊपर पक्का यकीन रखने वाले कहलाते हैं, परन्तु मुहम्मद साहब के बताये रास्ते पर चलते नहीं है। दीन में (धर्म में) फूट डालने वाले यहीं हैं और भी सुन्नत जमात (सुनकर ईमान लाने वाले मोमिन) का दावा लेते हैं।

पेहेचान नहीं मोमिन की, जिनमें अहमद सिरदार।
जो रूहें कही दरगाह की, बीच बका बारे हजार।। ४५ ।।

इन्हें मोमिनों की पहचान नहीं है। ब्रह्मसृष्टियों के सिरदार रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) मुहम्मद हैं। परमधाम में बारह हजार ब्रह्मसृष्टियां हैं।

ढूंढ़ पाए ना पकड़े मोमिन के, पर हुआ हक हाथ सहूर।
जो मेहेर करे मेहेबूब, तब ए होए जहूर।। ४६ ।।

यह दुनियां वाले ऐसे मोमिनों को ढूंढकर उनके कदम नहीं पकड़ते। पर बेचारे क्या करें? खुदा की भर्जी ही ऐसी है। जब खुदा ही मेहरबानी करें तो एक क्षण में उन्हें मोमिनों की पहचान हो जाएगी।

दिल मोमिन अर्स कह्या, बड़ा बेवरा किया इत।
दुनी दिल पर अबलीस, यों कहे कुरान हजरत।। ४७ ।।

इस तरह से बड़े विवरण के साथ मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और दुनियां के दिलों में शैतान की बैठक कुराने पाक में कही गई है।

दुनी न छोड़े तिन को, जो मोमिनों मुरदार करी।
दुनी हवा को हक जानहीं, रूहों हक सूरत दिल धरी।। ४८ ।।

जिस माया को मोमिनों ने मुरदार कर छोड़ दिया है। दुनियां उसे नहीं छोड़ सकती, क्योंकि दुनियां निराकार को ही खुदा समझ बैठी है। रूहों ने अपने दिल में खुदा की सूरत को बिठा रखा है।

राह दोऊ जुदी पड़ी, दोऊ एक होवें क्योंकर।
तरक करी जो मोमिनों, सो हुआ दुनी का घर।। ४९ ।।

इस तरह मोमिन और दुनियां (जीवसृष्टि) के रास्ते अलग-अलग हो गये। दोनों एक कैसे हो सकते हैं? जिस दुनियां को मोमिनों ने छोड़ दिया, वही दुनियां वालों का घर है।

मोमिन उतरे अर्स से, सो अर्स बिलंदी नूर।
ए जो रूहें कहीं दरगाह की, हक वाहेदत जिनों अंकूर।। ५० ।।

मोमिन अर्श से उतरे हैं और वह अर्श नूर बिलंद (परमधाम) है। इन्हीं रूहों को ही दरगाह की रूहें (पूज्यस्थान की परमधाम की रूहें) कहा गया है। श्री राजजी महाराज की एकदिली के यह निसबती है।

रूहें अर्स अजीम की, जाकी हक हादी सों निसबत।
ए हमेसा बीच अर्स के, हक जात वाहेदत।। ५१ ।।

यह ब्रह्मसृष्टियां अखण्ड घर परमधाम की हैं जो राजजी श्यामाजी के निसबती हैं और हमेशा ही अखण्ड परमधाम में रहती हैं और इसलिए इनको ही खुदा के अंग और एकदिली कहा गया है।

Nijanand App

रूहों तीन बेर खेल देखिया, बीच बैठे अपने वतन।
बड़ी दरगाह अर्स अजीम की, जित असल रूहों के तन।।५२ ।।

इन रूहों ने अपने घर में बैठकर तीन बार खेल देखा। जहां रूहों के असल तन हैं, वही बड़ी दरगाह अर्श अजीम अखण्ड परमधाम कहलाता है।

ए हुकमें कजा करी, अव्वल से आखिर।
हक अर्स मता मोमिन का, लिया सब फिरकों दावा कर।।५३ ।।

यह श्री राजजी महाराज ने हुकम से शुरू से अन्त की हकीकत पहले से लिखा दी है। श्री राजजी महाराज और मोमिनों का घर परमधाम है। सभी दुनियां के धर्म वाले दावा लेकर बैठे हैं कि हम भी वही हैं।

करनी को देखे नहीं, जो हम चलत भांत किन।
वह दुनियां को छोड़े नहीं, जो मुरदार करी मोमिन।।५४ ।।

अपनी करनी को तो दुनियां वाले देखते नहीं हैं कि हम किस तरीके से चल रहे हैं। वह दुनियां को छोड़ते नहीं जिसे मोमिनों ने नाचीज समझकर छोड़ दिया है।

मोमिनों के माल का, दावा किया सबन।
तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अर्स दिन।।५५ ।।

मोमिनों के जाहिर होने से पहले सभी मोमिनों का दावा लिए बैठे थे। जब अखण्ड परमधाम की तारतम वाणी से परमधाम का सब ज्ञान जाहिर हो गया तो यह सब दुनियां वाले झूठे खेल के कबूतरों की तरह उड़ गए।

गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान।
दावा किया वाहेदत का, पछतासी हुए पेहेचान।।५६ ।।

दुनियां वालों के ऊपर सबसे बड़ा गुनाह यही है कि उन्होंने मोमिन होने का झूठा दिखावा किया और जब उनको असल मोमिनों की पहचान होगी तो अपने को मोमिन कहने का झूठा दावा लेने का पश्चाताप करेंगे।

अब ए सुध किनको नहीं, पर रोसी हुए रोसन।
ए सब होसी जाहेर, ऊगे कायम सूरज दिन।।५७ ।।

अभी इस बात की पहचान किसी दुनियां वाले को नहीं है। जब जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी जाहिर होगी तब सबको पहचान हो जाएगी। उस दिन सब अपनी करनी पर रोएंगे।

रूहें जो दरगाह की, हक जात वाहेदत।
ए जाने अर्स अरवाहें, जिन मोमिनों निसबत।।५८ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वही श्री राजजी महाराज के अंग हैं और उन्हीं की एकदिली है। इस बात को वही ब्रह्मसृष्टि ही अच्छी तरह से समझती है, क्योंकि इनकी निसबत (रिश्ता) हक से है।

और गिरो फरिस्तन की, जिनका कायम वतन।
दुनियां कायम होएसी, सो बरकत गिरो इन।।५९ ।।

और दूसरी जो ईश्वरीसृष्टि है, उनका अखण्ड घर अक्षर धाम है। सारी दुनियां को इन दोनों जमात की कृपा से अखण्ड मुक्ति मिलेगी।

Nijanand App

और जो उपजे कुंन से, जो आदम की नसल।
दावा किया मोमिन का, जो दुस्मन अबलीस असल।। ६० ।।

जो सृष्टि 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है, वही आदम की औलाद आदमी है। इन्होंने ही मोमिन होने का दावा किया जबकि इनके दिलों पर दुश्मन शैतान (अबलीस) नारद बैठा है।

लिख्या सिपारे चौदमें, गिरो भांत है तीन।
महंमद समझाओ तिनों त्यों कर, जिनों जैसा आकीन।। ६१ ।।

कुरान के चौदहवें सिपारे में लिखा है कि सृष्टि तीन तरह की है। खुदा ने मुहम्मद साहब को कहा कि इन तीनों में से जिसको जैसा यकीन है उसको वैसा समझाओ।

किया तीनों गिरो का बेवरा, सरीयत तरीकत हकीकत।
हुकम हुआ महंमद को, कर तीनों को हिदायत।। ६२ ।।

तीनों तरह की सृष्टि की हकीकत लिखते समय शरीयत, तरीकत और हकीकत के ज्ञान से समझाना है, ऐसा हुकम मुहम्मद साहब को खुदा ने दिया।

हकीकत सों समझावना, समझे इसारत सों मोमिन।
हक सूरत द्रढ़ कर दई, तब दिल अर्स हुआ वतन।। ६३ ।।

मोमिनों को इशारे मात्र से हकीकत का ज्ञान समझाना। इन मोमिनों के दिल में हक की सूरत विराजमान है, ऐसा दृढ़ कर दिया तभी मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

और राह जो तरीकत, गिरो फरिस्तों बंदगी कही।
सो समझे मीठी जुबांन सों, समझ पोहोंचे जबरूत सही।। ६४ ।।

ईश्वरीसृष्टि के लिए तरीकत (उपासना) की बन्दगी बताई है। वह मीठी जबान से अर्थात् प्यार से समझेंगे और समझकर अक्षर धाम तक का उन्हें ज्ञान होगा।

तीसरी गिरो सरीयत से, जो करसी जेहेल जिदाल।
सो समझेंगे जिद्दैसों, क्या करें पड़े बंध दज्जाल।। ६५ ।।

जीवसृष्टि की तीसरी जमात को कर्मकाण्ड से समझाना है। यह अपनी मूर्खता से वाद-विवाद करेंगे और जिद से ही (हठ से ही) समझेंगे। वह विचार क्या करें, शैतान के बन्ध में बंधे हैं।

ए पढ़े सब जानत हैं, दिल पर दुस्मन पातसाह।
ले लानत बैठा दिल पर, ए अबलीस मारत राह।। ६६ ।।

कुरान के पढ़े-लिखे इलमी लोग यह सब जानते हैं, पर उनके दिलों पर भी शैतान की बैठक है। क्या करें? वह शैतान लानत लेकर सबके दिलों पर बैठा है और इस कारण से सबों को भटकाता है।

कुरान पढ़े चलें सरीयत, करें दावा मोमिनों राह।
पर क्या करें कुंजी बिना, पावें ना खुलासा।। ६७ ।।

कुरान के पढ़े-लिखे लोग कर्मकाण्ड में चलते हैं और दावा मोमिनों का लेते हैं। श्री प्राणनाथ इमाम मेंहदी कहते हैं कि तारतम ज्ञान नहीं होने से उन्हें इन रहस्यों का पता नहीं है।

मोमिन दुनी ए तफावत, ज्यों खेल और देखनहार।
मोमिन मता हक वाहेदत, दुनियां मता मुरदार।। ६८ ।।

मोमिन और दुनियां में इतना ही फर्क है जैसे खेल करने वाले और खेल देखने वाले में, मोमिनों के पास जागृत बुद्धि से हक की वाहेदत है और दुनियां के पास नाचीज माया की बुद्धि है।

Nijanand App

सबों दावा किया अर्स का, हिंदू या मुसलमान।
वेद कतेब दोऊ पढ़े, परी न काहूं पेहेचान।।६९ ।।

हिन्दू या मुसलमान दोनों ने परमधाम का दावा कर रखा है। हिन्दुओं ने वेदों को पढ़ा और मुसलमानों ने कतेबों को पढ़ा, परन्तु पहचान किसी को नहीं हुई।

कह्या दावा सब का तोड़या, दिया मता मोमिनों को।
लिए अर्स वाहेदत में, और कोई आए न सके इनमों।।७० ।।

खुदा ने मोमिनों को जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर झूठे दावेदारों का दावा तोड़कर मोमिनों को अपने घर परमधाम में ले लिया, जहां और कोई नहीं जा सकता।

सिपारे सत्ताईस में, लिखे दुनी के सुकन।
ए क्योंए पाक न होवहीं, एक तौहीद आब बिन।।७१ ।।

कुरान के सत्ताईसवें सिपारे में दुनियां के लिए लिखा है कि एक ही परमात्मा के पूजक बने बिना निर्मल (पाक) नहीं हो सकते।

मोको पाक होए सो छूइयो, यों केहेवे फुरमान।
करे गुसल तौहीद आब में, इन पाकी पकड़ो कुरान।।७२ ।।

कुरान कहता है कि पाक हुए बिना मुझे छूना मत। उस पारब्रह्म की एकदिली में जो स्नान करे, वही पाक है और उसे ही मुझे छूने का अधिकार है।

सो पाक कहे रूह मोमिन, जिनको तौहीद मदत।
सो पीठ देवें दुनीय को, जिनपे मुसाफ मारफत।।७३ ।।

मोमिन ही केवल पाक हैं, क्योंकि इनके पास ही तौहीद का ज्ञान (जागृत बुद्धि का ज्ञान) तारतम वाणी है और पारब्रह्म की पहचान है, इसीलिए यही दुनियां को पीठ दे देंगे।

सो सरीयत को है नहीं, ए तो खड़े जाहेर ऊपर।
एक हादी के लड़ जुदे हुए, ए जो नारी फिरके बहत्तर।।७४ ।।

दुनियां के जीव जो जाहिरी अर्थ लेते हैं और कर्मकाण्ड पर चलते हैं उनके पास यह शक्ति नहीं है, इसीलिए मुहम्मद के दीन को मानने वाले आपस में लड़-झगड़ कर बहत्तर फिरकों में बंट गये हैं।

लिख्या कुरान का माजजा, और नबी की नबुबत।
एक दीन जब होवहीं, दोऊ तब होवे साबित।।७५ ।।

कुरान के रहस्य और रसूल साहब की पैगम्बरी तभी सच्ची साबित होगी, जब सब दुनियां एक पारब्रह्म को मानने वाली हो जाएगी।

महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत।
ए सब गुमाने जुदे किए, दुस्मन राह मारत।।७६ ।।

मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) साहब का ज्ञान सबको मिलाना चाहता है और यह सब अहंकार में लड़कर अलग-अलग हो गए हैं। इस तरह दुश्मन शैतान ने अहंकार द्वारा सबको अलग-अलग टुकड़ों में बांट दिया है।

Nijanand App

एक फिरका नाजी कह्या, जित लिखी हक हिदायत।
एक दीन किया चाहे, एही मोमिन वाहेदत।।७७ ।।

इनसे अलग एक फिरका नाजी (मर्द मोमिनों) का कहा गया है जिसे हक खुदा श्री राजजी महाराज का आदेश प्राप्त है। सब दुनियां को एक दीन में लाने वाले परमधाम की ब्रह्मसृष्टि मोमिन होंगे।

बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत।
होसी हक दीदार सबन को, करसी महंमद सिफायत।।७८ ।।

बसरी (मुहम्मद साहब), मलकी (श्री श्यामाजी) और हकी (श्री प्राणनाथजी) तीन सूरतें मुहम्मद की होंगी, यह कुरान में लिखा है और इनकी कृपा से ही न्याय के दिन खुदा के दर्शन सभी को होंगे।

इनों हक बका देखाए के, करसी सबों एक दीन।
हक सूरत दृढ़ कर दई, देसी सबों आकीन।।७९ ।।

यह आखिरी मुहम्मद की हकी सूरत अखण्ड पारब्रह्म के दर्शन कराकर एक ही पारब्रह्म का पूजक बनाएगी (एकेश्वरवाद) जिससे पारब्रह्म निराकार नहीं है, उस की सूरत है, उसका धाम अखण्ड है, का सबको यकीन आ जाएगा।

मोमिन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेंहेदी महंमद।
पकड़ें एक वाहेदत को, और करें सब रद।।८० ।।

मोमिन (ब्रह्मसृष्टियां) हौज कौसर तालाब (श्री श्यामाजी मुहम्मद साहब और इमाम मेंहदी) का ज्ञान है जिसमें नहाना है और एक पारब्रह्म अक्षरातीत की पहचान कर सारी दुनियां को रद्द करना है।

हक बतावत जाहेर, मेरे खूबों में महंमद खूब।
सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम, जाको हकें कह्या मेहेबूब।।८१ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज स्पष्ट कहते हैं कि मेरे प्यारों में प्यारे इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) हैं, इसलिए मोमिन अब इनके चरण भी कैसे छोड़ेंगे, जिनको श्री राजजी महाराज स्वयं ही अपना प्यारा कह रहे हैं।

मासूक आसिक दोऊ जाने दुनी, हक मोमिन माहें खिलवत।
उतरी अरवाहें अर्स से, तो भी पढ़े न पावें वाहेदत।।८२ ।।

श्री राजजी महाराज और ब्रह्मसृष्टि मूल-मिलावे में एक ही आशिक माशूक हैं पर दुनियां इनको दो समझती है। परमधाम से रूहें खेल देखने के लिए उतरी हैं और इनके अन्दर पारब्रह्म बैठे हैं तो भी पढ़े-लिखे इलमी इन दोनों की एकदिली को नहीं समझ पाते।

महंमद बतावें हक सूरत, तिनका अर्स दिल मोमिन।
सो अर्स दिल दुनी छोड़ के, पूजे हवा उजाड़ जो सुंन।।८३ ।।

मुहम्मद बताते हैं कि हक की सूरत है और वह मोमिनों के दिल में बैठे हैं। दुनियां इन मोमिनों और पारब्रह्म, जो इनके दिल में बैठे हैं, को छोडकर निराकार और शून्य को पूजती है।

अबलीस कह्या दुनी दुस्मन, तो किया मोमिनों मता का दावा।
सो समझे न इसारतें, जिन ताले अबलीस हवा।।८४ ।।

दुनियां के दिलों में दुश्मन अबलीस बैठा है, इसलिए दुनियां वालों ने अपने को मोमिन कहा है। जिनके नसीब में शैतान लिखा है वह इन इशारतों को नहीं समझता है।

Nijanand App

जोस गिरो मोमिनों पर, हकें भेज्या जबराईल।
रूहें साफ रहें आठो जाम, और अबलीस दुनी दिल।। ८५ ।।

पारब्रह्म ने जोश के फरिश्ते जबराईल को मोमिनों के वास्ते भेजा जिससे मोमिन पारब्रह्म के जिक्र में मग्न रहें। दुनियां के दिल पर शैतान लिखा है।

अर्स से आया असराफील, दिया कई बिध सूर बजाए।
सो सोर पड़या ब्रह्मांड में, पाक किए काजी कजाए।। ८६ ।।

जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील ने घर (परमधाम) से आकर ज्ञान का बिगुल बजाकर तारतम वाणी जाहिर की जिससे सारे संसार में वाणी का उजाला हो गया कि पारब्रह्म (श्री प्राणनाथजी) न्यायाधीश बन सबको तारतम वाणी से पाक कर न्याय कर रहे हैं।

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, पाया अर्स खिताब।
इतहीं गिरो पैगंमरों, काजी कजा इत किताब।। ८७ ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को खुदा के अर्श होने का खिताब मिला। इन्हीं मोमिनों के पास ईश्वरीसृष्टि आएगी। इन्हीं मोमिनों के दिल में पारब्रह्म न्याय करने के लिए बैठे हैं।

फुरमान आया इमाम पर, कुंजी रूह अल्ला इलम।
खुली हकीकत हुकमें, इसारतें रमूजे खसम।। ८८ ।।

सब कुरान के ज्ञान का अधिकार इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के पास आया। तारतम ज्ञान की कुंजी रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) के पास आई। तब पारब्रह्म के हुकम से जो बातें उन्होंने इशारतों में लिखवा रखी थीं, खुलीं।

जो लिख्या जिन ताले मिने, माहें हक फुरमान।
रूहें फरिस्ते और कुंन से, तीनों की नसल कही निदान।। ८९ ।।

ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि जिनके ताले में जो कुछ कुरान में लिखा था, वह सब हकीकत जाहिर कर दी।

बेवरा हुआ मुसाफ का, एक दुनियां और अर्स हक।
हक अर्स में सब कह्या, दुनियां नहीं रंचक।। ९० ।।

अब श्री प्राणनाथजी ने कुरान की हकीकत को जाहिर कर दिया। दुनियां और पारब्रह्म के घर परमधाम की हकीकत बताई और कहा कि हक के अर्श परमधाम में सब कुछ है और यह दुनियां कुछ भी नहीं है।

और बेवरा कह्या जाहेर, दुनियां और मोमिन।
दुनी पैदा जुलमत से, मोमिन असल अर्स तन।। ९१ ।।

मोमिनों और दुनियां के बीच में और भी फर्क है। उसका विवरण स्पष्ट कहा है कि दुनियां की उत्पत्ति निराकार से है, जबकि मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं।

ए जो दुनियां चौदे तबक, हक के खेलौने।
ऐसे कई पैदा होत हैं, कोई कायम न इनों में।। ९२ ।।

यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड पारब्रह्म के सामने एक खिलौने के समान है। ऐसे कई ब्रह्माण्ड पैदा होते हैं पर इनमें अखण्ड एक भी नहीं है।

Nijanand App

सांच और झूठ को, दोऊ जुदे किए बताए।
हक मोमिन बिन दुनियां, बैठी कुफर खेल बनाए।। ९३ ।।

इस तरह से सच मोमिन और झूठ दुनियां को अलग-अलग बताया है। पारब्रह्म और मोमिन के बिना यह दुनियां वाले कुफर का खेल बनाकर बैठे हैं।

जब खुली मुसाफ मारफत, तब हुआ बेवरा रोसन।
खेल भी हुआ जाहेर, हुए जाहेर बका मोमिन।। ९४ ।।

जब कुरान के सार और हकीकत खुली तब सबको ज्ञान मिला कि खेल क्या है, इसकी जानकारी मिली और मोमिन जो अखण्ड हैं, वह जाहिर हुए।

दुनियां दिल पर अबलीस, तो राह पुलसरात कही।
वजूद न छोड़े जाहेरी, तो दस भांत दोजख भई।। ९५ ।।

दुनियां के दिल पर शैतान अबलीस (नारद) की बैठक होने से इसको कर्मकाण्ड के रास्ते पर चलने वाला कहा है। दुनियां वाले जाहिरी कर्मकाण्ड नहीं छोड़ते, इसलिए इसको दस तरह की सजा कही है। (दस तरह की सजा का वर्णन बड़ा कयामतनामा पृष्ठ २२, चौपाई २३ से २८ तक में है।)

भिस्त दई तिन को, जो हुते दुस्मन।
सबों लई थी हुज्जत, हम वारसी ले मोमिन।। ९६ ।।

जो जीव दुश्मन बने बैठे थे उनको भी अखण्ड बहिश्तों में कायमी दी, क्योंकि इससे पहले सभी ने मोमिनों के वारिस होने का दावा ले रखा था।

मेहेर हुई दुनियां पर, पाई तिनों आठों भिस्त।
बीज बुता कछू ना हुता, करी हुकमें किसमत।। ९७ ।।

दुनियां पर श्री प्राणनाथजी की मेहर हुई और उन्होंने जीवों को आठ तरह की बहिश्तों में अखण्ड किया। इन जीवसृष्टि का कुछ भी नहीं था पर पारब्रह्म के हुकम से इनकी किस्मत खुल गई।

मेहेर करी बड़ी महंमदें, आठों भिस्तों पर।
दोऊ गिरो दोऊ अर्सों, पोहोंचे रूहें फरिस्ते यों कर।। ९८ ।।

श्री प्राणनाथजी ने जीवों पर बड़ी कृपा की। जीवों को उन्होंने आठ बहिश्तों में कायम किया और दोनों गिरोह (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि) को परमधाम और अक्षरधाम में पहुंचने का रास्ता खोल दिया।

कोई आए न सके अर्स में, जाकी नसल आदम निदान।
दई हैयाती सबन को, मेहेर कर सुभान।। ९९ ।।

जो आदम (नारायण) से पैदा हुए हैं, वह परमधाम नहीं आ सकते। उनको श्री प्राणनाथजी ने कृपा कर आठ बहिश्तों में कायम किया।

करें हिन्दू लड़ाई मुझ से, दूजे सरीयत मुसलमान।
पाया अहमद मासूक हक का, अब छोड़ों नहीं फुरकान।। १०० ।।

श्री इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मुझसे कर्मकाण्डी हिन्दू भी लड़ते हैं और शरीयत के मानने वाले मुसलमान भी लड़ते हैं। अब श्री राजजी महाराज के माशूक श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) मिल गए हैं और इसलिए मैं कुरान को नहीं छोड़ूंगा।

Nijanand App

छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग।
हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग।। १०१ ।।

जब हिन्दू और मुसलमान श्री प्राणनाथजी से झगड़ा कर रहे थे तो उस समय छत्रसालजी आगे आये और दुनियां का साथ छोड़कर श्री प्राणनाथजी के हुकम को सिर चढ़ाया।

किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम।
दिया महंमद मेंहेदी ने, गिरो मोमिनों हाथ हुकम।। १०२ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी लेकर सब धर्मग्रन्थों के रहस्य खोल दिए और जागनी का काम मोमिनों को करने के लिए दिया।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १०२ ।।

खुलासा गिरो दीन का

ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान।
हक हादी गिरो अर्स की, सक भान कराऊं पेहेचान।। १ ।।

कुरान में लिखे के अनुसार मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) की जमात की हकीकत तुम देखो, पहचानो। श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ परमधाम के रहने वाले हैं। सब संशय मिटाकर उनकी पहचान कराता हूं।

हक सूरत हादी साहेद, मसहूद है उमत।
सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत।। २ ।।

पारब्रह्म की शक्ल है, वह निराकार नहीं है। इस बात की गवाही हादी श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियां दे रही हैं। यह पारब्रह्म के एकांत और उनके दिल की बात समझती हैं और कयामत के दिन की लीला को जानती हैं।

हक बका में जेता मता, सो छिपे ना मोमिनों से।
खेल में आए तो भी अर्स दिल, ए लिख्या फुरमान में।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम में जो कुछ न्यामत है उनकी सब जानकारी मोमिनों को है। वह खेल में आ गए हैं तो भी उन्हीं के दिलों को खुदा (पारब्रह्म) अर्श करके बैठे हैं, ऐसा कुरान में लिखा है।

लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार।
तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार।। ४ ।।

मेयराज नामा में रसूल साहब ने खुदा से नब्बे हजार हरफ सुने। लिखा है तीस-तीस हजार का अधिकार मुहम्मद की तीनों सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) को दिया है। (देखिए किस्सिुल्ल अबिया उर्दू (१३७६ हि. पृष्ठ ३५०-३५१)

एक जाहेर किए बसरिएं, दूजे रखे मलकी पर।
तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर।। ५ ।।

रसूल साहब की बसरी सूरत ने कुरान की तीस हजार बातें जाहिर कीं। दूसरे तीस हजार का अधिकार मलकी सूरत को दिया गया जिन्होंने धर्मग्रन्थों के रहस्य तारतम ज्ञान की कुंजी से बताए। बाकी के तीस हजार छिपा रखे थे जो श्री प्राणनाथजी हकी सूरत खोलकर फजर जाहिर करेंगे।

Nijanand App